Locke : Natural Law, Natural Right & Personal Property

राजनीतिक दर्शन के क्षेत्र में सामान्यतया लॉक को हॉब्स और रूसो के साथ एक समझौतावादी विचारक के रूप में जाना जाता है, लेकिन यदि उसके दर्शन का गहराई के साथ अध्ययन किया जाय, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि उसमें समझौता सिद्धान्त की अपेक्षा प्राकृतिक कानून तथा प्राकृतिक अधिकार की धारणा तथा इसकी सर्वोच्चता को अधिक महत्व दिया गया है। वास्तवतया लॉक ने समझौता सिद्धान्त की समस्त विवेचना ही प्राकृतिक कानून और प्राकृतिक अधिकार की सर्वोच्चता स्थापित करने के लिए की है।

लॉक के समझौता के सिद्धान्त में जिस प्राकृतिक अवस्था का उल्लेख किया गया है, उसकी विशेषता यह है कि उसमें प्राकृतिक नियम और प्राकृतिक अधिकार विद्यमान है। लॉक के प्राकृतिक अवस्था का यह प्राकृतिक नियम है कि "तुम दूसरों के प्रति वही बर्ताव करो, जिसकी तुम दूसरों से अपने प्रति आशा करते हो।" लॉक प्राकृतिक नियम को स्पष्ट करते हुए लिखता है कि "प्राकृतिक अवस्था को शासित करने के लिए प्राकृतिक नियम होता है जो प्रत्येक को बाध्य करता है और विवेक जो कानून का दूसरा नाम है, सम्पूर्ण मानव समाज को, जो उसका प्रायः पालन करता है, यह सिखाता है कि सब लोग समान तथा स्वतंत्र है, इसलिए किसी को भी दूसरे के जीवन, स्वास्थ्य, स्वतंत्रता एवं सम्पत्ति को क्षति नहीं पहुंचानी चाहिए।" ~~लॉक~~

लॉक का यह मानना है कि प्राकृतिक अवस्था का संचालन प्राकृतिक नियमों के अनुसार होता था तथा व्यक्ति को इन नियमों के अनुसार ही प्राकृतिक अधिकार प्राप्त थे। ये प्राकृतिक अधिकार निम्नलिखित तीन प्रकार के थे:

(i) जीवन का अधिकार (Right to life)
(ii) स्वतंत्रता का अधिकार (Right to liberty)
(iii) सम्पत्ति का अधिकार (Right to Property)

Scanned with CamScanner

जीवन के अधिकार की व्याख्या करते हुए लॉक यह कहता है कि स्वयं को को सुरक्षित करना मनुष्य की सबसे प्रबल आकांक्षा होती है। ~~और व्यक्ति~~ व्यक्ति न तो स्वयं अपने जीवन का अन्त कर सकता है और न ही वह किसी व्यक्ति को अपने जीवन के अन्त का अधिकार सौंप सकता है।

स्वतंत्रता के अधिकार से लॉक का आशय यह है कि, अपनी ही इच्छा के अनुसार कार्य करना तथा किसी अन्य इच्छा के अनुसार कार्य करने के लिए बाध्य न होना। प्राकृतिक स्वतंत्रता की इस स्थिति में व्यक्ति किसी भी ~~व्यक्ति~~ के ~~जीवन~~ अधीन नहीं होता, केवल प्राकृतिक कानून के अधीन होता है। लॉक की स्वतंत्रता की धारणा में समानता भी निहित है और ~~असमानता~~ असमानता से लॉक का तात्पर्य स्वाधीनता की समानता से है। अतः प्रत्येक को नैतिक सीमाओं में रहते हुए अपनी स्वतंत्रता का उपयोग करने का प्राकृतिक अधिकार प्राप्त है।

लॉक ने सम्पत्ति के अधिकार को अधिक महत्व प्रदान किया है। सम्पत्ति के अधिकार से उसका तात्पर्य प्राकृतिक अवस्था में जीवन-निर्वाह के बाह्य साधनों पर व्यक्तिगत स्वामित्व स्थापित करने से है। लॉक सम्पत्ति के अधिकार की व्याख्या करते हुए कहता है कि प्रारम्भ में सभी व्यक्तियों को प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं को अपने श्रम से उपयोगी बना लेता तो उस पर उसका व्यक्तिगत अधिकार हो जाता है। इस तरह मनुष्य के श्रम के माध्यम से व्यक्तिगत सम्पत्ति का निर्माण होता है। लॉक आगे कहता है कि व्यक्ति को उतनी सम्पत्ति रखनी चाहिए जितना कि वह उपयोग कर सके। लॉक जीवन का पालन करने के लिए सम्पत्ति के अधिकार को अत्यधिक महत्व देता है और उसमें जीवन और स्वतंत्रता के अधिकारों को भी सम्मिलित कर लेता है।

Scanned with CamScanner

इसके महत्व की विवेचना करते हुए वोंघान ने लिखा है कि "यह एक ऐसा अधिकार है जो प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के अभिन्न अंग के रूप में लेकर समाज में आता है। अतः समाज इस अधिकार की सृष्टि नहीं करता और कुछ सीमाओं को छोड़कर ~~नियमन~~ इसका नियमन भी नहीं कर सकता। इसका कारण यह है कि समाज और शासन दोनों का उद्देश्य समाज के पूर्ववर्ती प्राकृतिक अधिकार की रक्षा करना है।

जो भी हो, लॉक प्राकृतिक अधिकार और प्राकृतिक कानून के प्रति इतना आग्रहवान है कि उसके अनुसार यदि राजनीतिक व्यवस्था व्यक्ति के इन अधिकारों को भंग करती है तो जनता के द्वारा राजनीतिक व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह किया जा सकता है। लॉक ने अपनी इस धारणा के आधार पर ही 1688 की इंग्लैंड में क्रान्ति को न्यायोचित सिद्ध किया है।

आलोचकों ने लॉक के प्राकृतिक अधिकार की धारणा की आलोचना की है। उनका मानना है कि प्राकृतिक अधिकार की धारणा इस सिद्धान्त के स्पष्टतया विपरीत है कि अधिकारों का स्रोत समाज है और उनके उनके उपभोग और संरक्षण के लिए राज्य की आवश्यकता होती है। जन्मजात प्राकृतिक अधिकारों की धारणा आज अस्वीकृत हो चुकी है। जन्मजात के रूप में तो व्यक्ति को अन्तर्निहित शक्तियाँ ही प्राप्त होती हैं, अधिकार नहीं। ग्रीन ने ठीक ही कहा है कि "प्राकृतिक अवस्था में, जो कि एक असामाजिक स्थिति होती है, अधिकारों की कल्पना करने में ही एक विरोधाभास है।" लॉक का निजी सम्पत्ति के सम्बन्ध में विचारों में भी अस्पष्टता तथा असंगतता से परिपूर्ण है। फिर भी इन आलोचनाओं के बावजूद यह मानना होगा कि प्राकृतिक कानून और विशेषतया प्राकृतिक अधिकार की धारणा राजनीतिक दर्शन को लॉक की सबसे विशिष्ट देन है।

Scanned with CamScanner